पति होना

(5:25-33)

पत्नियों को अपने पतियों के अधीन होने का निर्देश देने के बाद (5:22) पौलुस ने पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम रखने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए सज़्बोधित किया। पत्नी के लिए ज़्या आवश्यक है? इस उज़र पर विचार करें:

> पुरुषों के साथ सज़्बन्धों में अधिकतर स्त्रियां ज़्या चाहती हैं? काम में समान अवसर? घर में सज़्मान? बीसवीं शताज़्दी के अंत तक पश्चिमी जगत में शायद ही कोई होगा जो यह सुझाव दे कि ऐसा नहीं होना चाहिए। ... फिर तो बहुत सी स्त्रियों के लिए महिलाओं के अधिकारों तथा अवसरों के सुरक्षित हो जाने से, काम और घर दोनों में टालने की उनकी इच्छा पूरी हुई है। अज़्सर कैरियर से लोग संतुष्ट नहीं होते। विवाह तथा पारिवारिक जीवन वैसा नहीं होता जैसा इसे बनाया गया था। पुरुषों के साथ अपने दैनिक सज़्बन्धों में अधिकतर महिलाओं को लगता है कि उनके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण, कुछ आधारभूत है, जिसकी कमी है।
>
> यदि पूछा जाए, बहुत कम महिलाएं और कुछ पुरुष ही समस्या पर अंगुली रख सकते हैं। 90 के दशक में हम सब बुरी तरह से स्वतन्त्र हुए हैं और ऐसे ही हमारी सोच धर्मनिरपेक्ष है। ... कौन अनुमान लगा सकता है कि अधिकांश महिलाएं ज़्या चाहती हैं, केवल कुछ महिलाओं को ही मर्द की आत्मिक अगुआई मिलती है?[1]

इफिसियों 5:25-33 में ''मर्द की आत्मिक अगुआई'' शज़्द नहीं मिलता, परन्तु इस पद में पौलुस यही कह रहा है। जिस प्रकार पत्नी अपने पति की अगुआई को मानकर प्रभु की अधीनता दिखाती है, वैसे ही पति अपनी अगुआई का सही ढंग से इस्तेमाल करके प्रभु की अधीनता को मानता है।

एक पति इस आज्ञा को गंभीरतापूर्वक लेकर ही सही ढंग से अगुआई करता है: ''हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो'' (5:25क)। इस आदेश से मर्द की आत्मिक अगुआई का पता चलता है। यह ''बॉस'' बनने से कहीं अधिक प्रेम से सेवा करने और कोमलता से देखभाल करना है।

पतियों के लिए पौलुस के निर्देश पढ़ें:

हे पतियो, अपनी पत्नियों से वैसा ही प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से किया-जिसकी मुज़्य बात लेना नहीं देना है। मसीह का प्रेम कलीसिया को सज़्पूर्ण और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।

ज़्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा बरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इसलिए कि हम उस की देह के अंग हैं। इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने (5:25-33)।

पौलुस के शज़्द हमें यह मूल सच्चाई सिखाते हैं: *अपनी पत्नी की कोमलता से अगुआई करके पति दिखाता है कि वह मसीह को कितनी गंभीरता से लेता है।*

कोमलता से देखभाल की गवाही देना

एक पति के लिए इसका ज़्या अर्थ है? इसका अर्थ प्रेमपूर्वक अगुआई करने वाला होना है। आयत 25 कहती है, ''हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, ...'' यह तो आसान नहीं लगता है? जटिलता हमारे आज के ''प्रेम'' शज़्द के दुरुपयोग के कारण बढ़ती है। ''प्रेम'' में अज़्सर धागे जुड़े होते हैं: कइयों के लिए प्रेम का अर्थ तब तक उसके साथ अच्छा व्यवहार करना है जब तक वे जवान और सुन्दर हैं। दूसरों के लिए, इसका अर्थ बच्चों की खातिर, या घर की देखभाल और बच्चों के पालन-पोषण में उसके प्रयासों के बदले उसे सुविधा देना है । जब तक वह आपके साथ अच्छी रहे, तब तक उसके साथ अच्छा रहना है।

पौलुस ने हमारी धारणा के अनुसार प्रेम की परिभाषा को जोड़ने की जगह नहीं छोड़ी। पौलुस ने यह समझाने में सहायता के लिए कि उसके मन में ज़्या था, दो रूपक दिए।

पौलुस की पहली तुलना स्पष्ट है, ''हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (5:25)। पति और पत्नी के बीच में होने वाले सज़्बन्ध के लिए पाया जाने वाला असल नमूना मसीह और कलीसिया में ही मिलता है। यह तुलना बुहत ही जबर्दस्त है! इफिसियों की पूरी पत्री में पौलुस ने मसीह और कलीसिया में एकता पर जोर दिया। मसीह कलीसिया का ऊंचा किया हुआ सिर है (1:22; 4:15)। मसीह कलीसिया से प्रेम करता है और उसने इसके लिए अपने आप को दे दिया। (3:19; 5:2)। मसीह ने कलीसिया को अपनी मृत्यु से उद्धार दिलाया (1:7, 13; 2:5, 6; 2:14-18)। वह अपनी कलीसिया की आवश्यकताओं तथा उसके विकास का ध्यान रखता है (4:11-16), और उनके हृदयों में वास करता है, जो उसकी

कलीसिया के हैं (3:17)। मसीह अपनी कलीसिया के विकास तथा भलाई के लिए उसकी आवश्यकताओं को पूरा भी करता है (4:15, 16)।

पौलुस ने यह सब कहा है। अब अध्याय 5 में, पौलुस ने पति और पत्नी के बीच होने वाले प्रेम के आदर्श के रूप में मसीह और कलीसिया के सम्बन्ध को दिखाया। पौलुस द्वारा ऐसी तुलना करने का साहस यह संकेत देता है कि वह इस बात में कितना गंभीर था कि मुझे अपनी पत्नी के साथ कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए और आपका अपनी पत्नी के साथ कैसा सम्बन्ध होना चाहिए।

अध्याय 5 में पौलुस ने कलीसिया के प्रति मसीह के प्रेम के समर्पण को दिखाया। यह हमें मसीह के प्रेम की *पूरी समझ* का अहसास कराता है।

पहला, मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया। यह हमें अनन्तकाल की ओर पीछे ले जाता है। सृष्टि की रचना से पूर्व, मसीह अपनी कलीसिया से प्रेम रखता था। जब कलीसिया केवल परमेश्वर के मन में ही थी, तभी से मसीह उससे प्रेम रखता था।

दूसरा, मसीह ने उसके लिए अपने आप को दे दिया। वह स्वर्ग छोड़, पृथ्वी पर आया, मनुष्य बना और कलीसिया को जीवन देने के लिए मर गया। उसने कुछ भी रख न छोड़ा। इसके लिए उसने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

तीसरा, मसीह ने वचन के द्वारा जल के स्नान से उसे शुद्ध किया। पौलुस को पहले अनुभव से ही इस बात का पता चल गया था। एक पापी के रूप में, जब वह मसीह की कलीसिया में नहीं था, तब उसे यह बताया गया था कि उद्धार पाने के लिए और कलीसिया में मिलाए जाने के लिए उसे ज़्या करना आवश्यक है। उसे यह शब्द सुनाई दिए थे: ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। बहुत सी साम्प्रदायिक कलीसियाओं से मसीह की कलीसियाओं द्वारा अपने आप को अलग रखने का एक कारण यह विश्वास है कि जब कोई व्यक्ति पानी में बपतिस्मा लेने के लिए परमेश्वर के वचन में विश्वास रखकर आता है, तो वह व्यक्ति आत्मिक रीति से शुद्ध होता है, न कि भौतिक जल से, बल्कि मसीह ही उसे शुद्ध कर देता है।

चौथा, मसीह अपनी कलीसिया को पवित्र बनाने के प्रयासों से उसके प्रति अपने प्रेम को दिखाता है। इस क्रिया के वाक्य में वह सब कुछ समेटा जाता है, जो करने की मसीह कोशिश कर रहा है। वह अपनी कलीसिया को स्वभाव तथा आचरण में पवित्र बनाना चाहता है: ''उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे'' (5:27)।

अंत में, मसीह कलीसिया से प्रेम करता है, और युग के अंत में वह उसे अपने लिए एक तेजस्वी कलीसिया के रूप में खड़ा करेगा। ''तेजस्वी'' के लिए यूनानी शब्द *endoxos* का मूल अर्थ ''महिमामय'' है। पवित्र शास्त्र में ''महिमा'' शब्द परमेश्वर के स्वभाव के चमकदार, प्रकाश को कहा गया है। एक दिन मसीह का प्रेम अपनी कलीसिया को तेजपूर्ण, ईश्वरीय सुन्दरता दिला देगा। एक और प्रेरित, यूहन्ना ने इसकी झलक दी कि यह कैसी होगी:

> फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली

पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने पति के लिए श्रृंगार किए हो (प्रकाशितवाक्य 21:1, 2)।

अपनी कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम को समझने की कोशिश करना हमारी समझ से बाहर है। हम संसार के सभी समुद्र तटों पर रेत के कणों को तो आसानी से गिन सकते हैं परन्तु अपनी कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम को मापना हमारे लिए सम्भव नहीं है। उसका प्रेम अनन्तकाल से वर्तमान तक, आगे अनन्तकाल के लिए है।

समझ में न आने वाले इस प्रेम से हम क्या करते हैं। हे पतियों, इससे हमें अवश्य अपने घुटनों पर झुक जाना चाहिए। हमें उस दुष्ट घमण्ड को निकाल देना चाहिए जो हमारे विवाह को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बनाने में रुकावट डालता है। हमें उस स्वार्थ को भी मिटा देना चाहिए जो हमें अपनी पत्नियों के सेवक बनने से रोकता है।

मसीह मुझे दिखाता है कि मेरी पत्नी को सेवक अगुवे की आवश्यकता है। उसे ऐसे पति की आवश्यकता है जो उससे प्रेम करता हो, जो उससे लेने के बजाय देता ही हो, जो उसमें अच्छाई पाता हो, और जो उसे वैसा बनाना चाहता हो जैसा एक बालक के रूप में वह परमेश्वर के मन में है।

कोमलता से देखभाल का अनुभव करना

पौलुस ने हमें उस प्रेम को समझने में सहायता की है, जो अपनी पत्नियों के लिए हमारा होना चाहिए। उसने एक और रूपक दिया। यह रूपक हमारे अपने अनुभव से मेल खाता है: ''इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा बरन उसका पालन-पोषण करता है'' (5:28, 29क)। इसमें यदि कोई बात मुझे समझ आती है तो वह यह है कि मैं अपनी देखभाल करूं। जब मुझे भूख लगती है, तो मुझे खाना खाना पड़ता है। थक जाने पर मैं विश्राम करता हूं। जब मुझे चोट लगती है तो पीड़ा मिटाने के लिए जो भी बन पड़े, मैं करता हूं।

विवाह अद्भुत है क्योंकि हम दोनों के एक तन होने के कारण, अपनी पत्नी से प्रेम रखने के कारण मैं अपना प्रेम व्यक्त भी करूंगा। उसकी देखभाल मैं ऐसे ही करूंगा जैसे अपनी करता हूं।

तो फिर हमें अपनी पत्नियों के लिए क्या करना चाहिए? यह सूची शुरुआत के लिए ठीक हो सकती है। पतियों को निम्न बातें करनी चाहिए:

अपना समय दें ... वह आपकी पहली प्राथमिकता है;
अपनी उपस्थिति दें ... शारीरिक और भावनात्मक दोनों प्रकार की उपस्थितियां;
सच्चाई दें ... यह सुनिश्चित करते हुए कि आपकी पत्नी और आपका परिवार

सच्चाई को सीख रहा है, घर में आत्मिक अगुआई दें;
अपना प्रेम दें ... उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए;
अपनी प्रार्थनाएं दें... उसकी कोमलतापूर्वक देखभाल के लिए पिता के सामने;
अपनी क्षमा दें ... सज़्बन्ध को बहाल करने के लिए;
अपनी अगुआई दें... घर और परिवार के लिए;
अपनी मीरास दें... उसके साथ अपना सब कुछ बांटकर।[2]

कोमलतापूर्वक देखभाल करना

पत्नियों के लिए परमेश्वर का वचन ''अधीन'' रहना है (5:22)। पतियों के लिए परमेश्वर का वचन ''प्रेम'' रखना है (5:25)। अपने आप से पूछें, ''ज़्या मैं अपने साथी की देखभाल अपने आप से ज्यादा करता/करती हूं?''

प्रेम करने वाला पति कभी अपनी पत्नी को त्यागेगा नहीं। वह उससे उसकी क्षमता से अधिक की अपेक्षा नहीं करता और न जबर्दस्ती से कोई मांग रखता है।

मसीही विवाह में आवश्यक कोमलतापूर्वक देखभाल 1 कुरिन्थियों 13:4-8 में मिलती है: यह उस प्रेम से आता है जो धीरजवंत, दयालु, और क्षमा करने वाला है। यह इर्ष्यालु या घमण्डी नहीं बल्कि पति को अपनी पत्नी की भलाई के लिए अगुआई देता है। ऐसा प्रेम कभी नहीं मरेगा।

जो पति सचमुच मसीह के प्रति और अपने विवाह के लिए समर्पित है, उसे अपनी पत्नी को आत्मिक उन्नति करते देखने में बड़ा आनन्द मिलता है। वह उसे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बनने में सहायता करता है और उसके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना में भरोसा रखता है।

सारांश

पतियो, परमेश्वर आपसे सिद्ध होने की उज़्मीद नहीं रखता, परन्तु वह आपसे यह उज़्मीद अवश्य करता है कि आप अपनी पत्नियों को वह प्रेम तथा कोमलतापूर्वक देखभाल अवश्य दिखाएं जो उन्हें आपसे चाहिए।

यीशु की ओर देखें। वह आपकी सहायता करने को तैयार है। कुछ पल निकालकर वैसा पति बनने के लिए अपने आप को फिर से समर्पित ज़्यों नहीं करते, जैसा परमेश्वर आपसे इच्छा रखता है? परमेश्वर आपको सामर्थ और सहायता देने की प्रतिज्ञा निभाएगा।

''हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो...।''

टिप्पणियां

[1]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *व्हट मोस्ट वूमैन वांट: व्हट यू फाइंड* (यूजीन, ओरिग.: हार्वेस्ट हाउस पज़्लिशर्स, 1992), 7-8. [2]मैज़्स ऐंडर्स, *द गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ'' वर्ल्ड* (डेलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 191.